श्री भागवतनो सार

सांभलो साथ कहूं विचार, फल वस्त जे आपणो सार।
ते जोईने आवो घरे, रखे अमल तमने अति चढे।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! सुनो, मैं अपने विचार बताती हूं। इसको विचार कर अपनी सार वस्तु लेना और देखकर घर वापस आना, इसलिए विचार कर कहती हूं ताकि तुमको माया का असर न हो।

ए अमलतणो मोटो विस्तार, ते नेठ नव जोवो निरधार।
आगे आपणने वार्त्या सही, श्री मुख वाणी धणिए कही।। २ ।।

इस माया के नशे का बड़ा विस्तार है। वह निश्चय ही देखने योग्य नहीं है। धनी ने अपने श्री मुख से पहले भी हमें रोका था।

ते माटे तमने देखाडूं सार, आपण घरने आपणा आधार।
विहिला थयानी नहीं आवार, आंहीं तमने नहीं मूकूं निरधार।। ३ ।।

इसलिए तुमको सार वस्तु अपने घर और अपने धनी को दिखाती हूं। अब धनी से विमुख होने का समय नहीं है। अब निश्चय करके तुम्हें यहां नहीं छोड़ेंगे।

वेदतणो सार भागवत थयो, तेहेनो सार दसमस्कन्ध कह्यो।
दसमतणा अध्याय नेऊ, तेहेनो सार काढीने देऊं।। ४ ।।

वेद का सार भागवत हुई। जिसका सार दसवां स्कन्ध कहा है। दसवें स्कन्ध में नब्बे अध्याय हैं। उनका सार निकाल कर देती हूं।

नेऊ मांहें अध्याय पांत्रीस, जे वृज लीला कीधी जगदीस।
जगदीस वचन एणे न केहेवाय, एम न कहूं तो विगत केम थाय।। ५ ।।

नब्बे अध्यायों में पैंतीस अध्यायों तक श्री कृष्ण (जगदीश) की ब्रज लीला का वर्णन है। इन श्री कृष्ण को जगदीश कहना ठीक नहीं है। यदि ऐसा न कहूं तो भेद कैसे खुलेगा?

ते माटे हूं कह्यूं एम, नहीं तो रामत जे कीधी श्री कृष्ण।
ए नामनुं तारतम में केम केहेवाय, साथ संभारी जुओ जीव मांहें।। ६ ।।

इसलिए मैंने ऐसा कहा। नहीं तो, जो लीला श्री कृष्ण ने की है उसका तारतम से मैंने खुलासा किया है। श्री कृष्ण को जगदीश कहना ठीक नहीं है, यह तुम अपने जीव में विचार कर देखो।

आपणां घरणी वातज थई, अने तमने थाकी हूं कही कही।
ए घर केम हूं प्रगट करूं, तम थकी नथी कांईए परूं।। ७ ।।

यह तो अपने घर की बात है। मैं तुम्हें कह-कहकर थक गई हूं। अपने घर को मैं कैसे जाहिर करूं, परन्तु तुमसे मैं अलग नहीं हूं।

ते माटे हूं कह्यूं घणुए, नहीं तो एटलूं केहेवूं स्या ने पडे।
आ प्रगट कीधूं ते तम माट, नहीं तो आ वचन कांई नव केहेवात।। ८ ।।

इस वास्ते मैंने बहुत कहा है। नहीं तो, इतना कहने की क्या आवश्यकता थी? यह तुम्हारे लिए मैंने बताया है। नहीं तो, यह वचन कोई नहीं कहता।

Nijanand App

हवे घर ओलखी ग्रहजो मन, घणूं तमने कह्यूं तारतम।
ए जाणजो मन जीवतणे, पेरे पेरे तमने कह्यूं विध घणे।। ९ ।।

अब घर को पहचान करके अपने मन में ग्रहण कर लेना। मैंने तुमको तरह-तरह से तारतम की वाणी से समझाया है। इस हकीकत को मन और जीव की तरह जानना। तुमको मैंने तरह-तरह से बहुत कहा है।

ते माटे हूं फरी फरी कहूं, जे माया अमल सवल चढ्यूं।
अमल उतारो प्रकास जोई करी, अने भरम गेहेन मूको परहरी।। १० ।।

इस वास्ते मैं बार-बार कहती हूं कि माया का बड़ा प्रबल नशा चढ़ा हुआ है। इसको ज्ञान के प्रकाश से देखकर उतार दो और संशय तथा सुस्ती को छोड़ दो।

अनेक विधें कह्यूं प्रबोध, हवे रखे रुदे राखो निरोध।
सुणजो ए अध्याय पांत्रीस, जुआ वली कीधां मांहेंथी त्रीस।। ११ ।।

मैंने तुमको अनेक प्रकार से सावचेत (सावधान) किया है। अब इसको हृदय में रखकर, रास्ते की रुकावटें छोड़ दो। उन पैंतीस अध्यायों को सुनो। इनमें भी तीस अध्याय अलग करके छोड़ो।

पंच अध्याई सुकजीए कही, पण परीछित नव सक्यो ते ग्रही।
प्रश्न चूक्यो थयो अजाण, रास लीला न वरणवी प्रमाण।। १२ ।।

शुकदेवजी ने पांच अध्यायों में ही रास का वर्णन किया है, परन्तु परीक्षित उसको भी ग्रहण नहीं कर सका। उसने भूल से प्रश्न कर दिया और इस तरह से रास लीला का वर्णन न हो सका।

त्यारे हाथ निलाटे नाख्यो सही, सुकजी कहे मुख मांहेंथी रही।
हूं जोगी तूं राजा थयो, रासतणो सुख नव जाए कह्यो।। १३ ।।

तब शुकदेवजी ने माथे पर हाथ ठोककर कहा कि मैं योगी और तू राजा रहा और रास के सुख का वर्णन अब नहीं किया जाता।

ए वचन मारे मुखथी नव पडे, न कांई तारे श्रवणा संचरे।
आ जोग आपण नथी बेहु, तो ए लीला सुख केणी पेरे सहूं।। १४ ।।

यह वचन मेरे मुख से नहीं निकलते और न तेरे कान इसे सुन सकते हैं। हम दोनों इसके योग्य नहीं हैं, तो इस लीला के सुख को कैसे सहन करें?

एहेना पात्र हसे ए जोग, आ लीलानो ते लेसे भोग।
केसरी दूध न रहे रज मात्र, उत्तम कनक विना जेम पात्र।। १५ ।।

इसके योग्य इसके पात्र होंगे। वही इस लीला का आनन्द लेंगे। शेरनी का दूध सोने के बर्तन के बिना अंश-मात्र भी (सुरक्षित) नहीं रखा जा सकता।

एह वचन सुणीने राय, पडयो भोम खाय मुरछाय।
कम्पमान थई कलकल्यो, रुदन करे रुदे अंतर गल्यो।। १६ ।।

इन वचनों को सुनकर राजा मूर्छित होकर धरती पर गिर गया तथा बिलख-बिलखकर रोया और कांपने लगा।

Nijanand App

आलोटे दुख पामे मन, अंग मांहें लागी अगिन।
त्यारे वली सुकजी ओचरया, आंसू लोवरावी बेठा करया।। १७ ।।

वह धरती पर दुःखी होकर लोट रहा है और उसके अंग में (चर्चा न सुन सकने की) आग लगी है। तब शुकदेवजी बोले और उसे आसूं पुंछवा कर बिठाया।

सांभल राजा द्रढ करी मन, अंतरगते केहेता वचन।
ते केहेवावालो उठी गयो, हूं एकलो बेसी रहयो।। १८ ।।

हे राजा! दृढ़ मन से सुनो। मेरे अन्दर बैठकर जो वर्णन कर रहा था, वह उठकर चला गया है। मैं अकेला ही बैठा हूं।

हवे पूछीस मूने तूं सूं, तुझ सरीखो बेठो हूं।
त्यारे परीछित चरण झालीने कहे, स्वामी रखे उत्कंठा मारा मनमां रहे।। १९ ।।

अब तू मेरे से क्या पूछता है? मैं अब तेरे समान ही बैठा हूं। तब परीक्षित ने चरण पकड़ कर कहा, हे स्वामी! कृपा करो जिससे मेरे मन में कोई चाहना न रह जाए।

मुनीजी हूं घणों दोहेलो थाऊं, रखे अगिन हूं लीधे जाऊं।
त्यारे भागे आवेस कही पंच अध्याय, पण रास न वरणव्यो तेणे ताय।। २० ।।

राजा परीक्षित कहते हैं, हे मुनिजी! मैं बहुत दुःखी हूं और यह चाहना पूरी न हो सकने की अग्नि से मुझे बचाएं। तब आवेश चले जाने के बाद पांच अध्याय कहे, लेकिन रास का वर्णन नहीं कर सके।

हवे सुकजीना वचन हूं केटला कहूं, हूं सार काढवा भागवत ग्रहूं।
सघलानो सार आ ते रास, जे इंद्रावती मुख थयो प्रकास।। २१ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि अब शुकदेवजी के वचनों को मैं कितना कहूं? उन वचनों का सार निकालने के लिए भागवत ग्रहण करती हूं। सम्पूर्ण भागवत का सार रास है। उस रास का वर्णन श्री इन्द्रावतीजी के मुख से रास ग्रन्थ में हुआ है।

हवे रासतणो सार तमने कहूं, तेतां आपणूं तारतम थयूं।
तारतम सार आ छे निरधार, जिहां वसे छे आपणा आधार।। २२ ।।

अब रास का सार तारतम कहती हूं। रास का सार ही अपना तारतम है। तारतम का सार अपना घर है, अपना धनी है जो निश्चित है।

घर श्री धाम अने श्री कृष्ण, ए फल सारतणो तारतम।
तारतमे अजवालूं अति थाय, आसंका नव रहे मन मांहें।। २३ ।।

घर श्री परमधाम और अनादि अक्षरातीत श्री कृष्ण—यह तारतम के सार का परिणाम हैं। तारतम से अत्यन्त उजाला हो जाता है। मन में किसी तरह की शंका नहीं रह जाती।

मन जीवने पूछे रही, त्यारे जीव फल देखाडे सही।
ए अजवालूं कीधूं प्रकास, तारतमना वचन मांहें रास।। २४ ।।

मन जीव से पूछता है, तब जीव सार बताता है। यह उजाला प्रकाश की वाणी से मिला। रास का वर्णन तारतम में है, भागवत में नहीं।

Nijanand App

ए अजवालूं जीवने करे, जे जीव घर भणी पगला भरे।
पोते पोतानी पूरे साख, ए तारतम तणो अजवास।। २५ ।।

रास की वाणी के ज्ञान से जीव को घर का प्रकाश (उजाला) मिल जाता है और वह घर की तरफ जाता है। तारतम के प्रकाश से उसे स्वयं अपने अन्दर साख (साक्ष्य) मिलती है।

ते लई धणी आव्या आंहें, साथ संभारी जुओ जीव मांहें।
एणे घरे तेडे आ वल्लभ, बीजाने ए घणूं दुर्लभ।। २६ ।।

उसको लेकर धनी हमारे बीच में आए हैं। इसलिए, हे साथजी! इस वाणी को याद कर जीव में देखो। इस वाणी से धनी घर बुलाते हैं। यह दूसरों को मिलना दुर्लभ है।

बीजा कहूं छूं एटला माट, जे माया भारे करो छो साथ।
तारतम पख बीजो कोय नथी, एक आव्या छो तमे घेर थकी।। २७ ।।

हे सुन्दरसाथ! दूसरा शब्द इसलिए कहा है कि तुम माया को जोर से पकड़ कर बैठ गए हो। तारतम के विचार से तुम ही घर (परमधाम) से आए हो और दूसरा कोई नहीं आया।

आ माया कीधी ते तम माट, तारतम मांहें पाडी वाट।
एणी वाटे चालिए सही, श्री वालाजीने चरणज ग्रही।। २८ ।।

यह माया तुम्हारे लिए ही बनाई है। इस माया में तारतम से ही घर का रास्ता खुला है। इसलिए वालाजी के चरण को ग्रहण कर इसी रास्ते पर चलें।

एह चरन छे प्रमाण, इंद्रावती कहे थाओ जाण।
तमे वचनतणा लेजो अर्थ, आपण जीवनो ए छे ग्रथ।। २९ ।।

वालाजी के यह चरण ही हमारा मूल खजाना है। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि इन वचनों को जानकर इनके अर्थ को ग्रहण करो।

।। प्रकरण ।। ३३ ।। चौपाई ।। ९९० ।।

एक सौ आठ पक्ष का सार

हवे वली कहूं ते सुणो, अठोतर सो पखज तणो।
ए विचार जो जो प्रमाण, ऐहेनो सार कादूं निरवाण।। १ ।।

अब श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, एक सौ आठ पक्ष का वर्णन करती हूं, सो सुनो। इन विचारों को प्रमाण के साथ देखना, इनका सार निकाल कर मैं बताती हूं।

माया जीव कोई कोई छे समरथ, ते दोड करे छे कारण अरथ।
निसंक आपोपा नाख्या जेणे, निहकर्म मारग लीधां तेणे।। २ ।।

माया में कोई-कोई समर्थ जीव है। वह भी धन के लिए ही दौड़ रहा है। जिन्होंने अपने आपको कुर्बान कर दिया है वह निष्काम मार्ग पर चले।

पुष्ट मरजाद ने परवाह पख, एह तणी कीधी छे लख।
ते वेहेची कीधा नव भाग, चढे पगथी लई वेराग।। ३ ।।

पुष्ट, मर्यादा और प्रवाह तीन पक्ष हैं। इनको देखकर समझना है। इनको बांटकर नौ भाग किए (हर एक के तीन तीन)। जो इन पर चले उनको संसार से वैराग्य हो गया।

Nijanand App